

[illegible] गंधकुय लँ [illegible] काभिठ या लँ ८ यम [illegible]
लं । जयवा २८ [illegible] नसिं लक्ष्मीस्वान सि जीवनपाके सिं ।। धनयवनी
[illegible] गलनय ।। न्हयपक माल नापा [illegible] दाव किं [illegible] विया
व विगलन पाय [illegible] तथाय ।। दिवाया वीनया [illegible] दय [illegible] मनको
उखेकेनाविल [illegible] नापा दयकं [illegible] विज्ञान का [illegible]

ॐ नम श्रीगणेशाय ॥ से मिथबाबुस्तुरे छुनु सम्बीयकानकी
स्मा द्रिक तेनादेव कुंग दिशु सुभुजाय ॥ भाग ॥ द्रक स्यानि सु
गर्ता पी नीलिक्षी नीतिविष्कत ४ मुख जीव छ्व वागी (भ म श
दृश्लो विदा म्बव ॥२॥ साम मित्र ४ मुष्टा द चि ३ वी नवल
पिता मह ४ अग्रव दि दिधे गमक हमी फ ४ उक्तन्कुवि

॥२॥ संस्कृग ४ सर्वदसत्व ४ सर्वव क्र ज्ञ उप्रद ध्यं व ४ सय षभा ऊ
माविच अहवीत निवाकन्या ॥ दा ॥ वशु विंशति नामाव सु
स्मृ वासु य ४ प १० न आयु गारा (स्ये स मा नो धन भान्दी
सु सं ष्विनि ॥ ३ ॥ ओ द्व वे श ने ताग्री ॥ सर्वदाय विव जिन
कर्म्म श्र मन सा चावं ॥ यचा दी सम्पू या जिन ॥ ४ ॥ नदेव १०

नाद्यव केत्य न्निविव घता ॥४॥ तुबु दिन ह्यडा य द्यस्ु यूथ्यावध्
थ्यचे नं घने ॥७॥ न्यदी थावनक्षेप विपना ज्ञन यूर्वे कथ्यव
ताण्गकि कुवेकत्सी स्वयमाह दृहस्य लि ॥८॥
स्वाणे ध्यनु भाव संपाके ॥४॥
उ नम ॥४॥ नु थीय जाद्वेस्य मन्त्री दिवा दत्ताउग नाताम्नवे

कवि सु थमकुर्ल काथ्या वीथीना र्न्देद कथा ॥१॥ ननिकृत्ये
नामानी य ॥४॥ कीर्ति यंति नियम ॥४॥ प्रमुर्कि नतस्याक्त लक्ष्मीयि
थ्यविन नि ॥४॥ ९॥ नवी ॥ नमा ज्ञीन चाडाय ॥४॥ नमस्कार
म वाडाय दुरुक जीचक मावीन कैथ्यार्म गल्ल ताताय डवाया
कुवीत्वामि न वोथा ध्रण व हास नैं चीय घने दुखाणलेंवुथ
ल ॐ नाधानि माहावचे हन दूनू द्धि विवनाथि यू थीवेवा

ग्रसविलुहीस्वण कौर्लं हीमाकर्लं थंविनो नमल्लं गीवीदूखो
भाग्यस्तुनौ [illegible] ॥४॥

निरद्वावै॥
प्रथर्थेकुग्रह
अुथनस्कुवनि्रस्था॥
लयस्थाकौर्मि ४०
एककालं द्विकालं
कैवास्मलमनुष्या
मृत्युस्कानश्कि णाव
यन्नूनर ग्रदृवा॥ ४२
समीपत्वेममयज्ञ॥
मद्धि नेउ विल
ह्जयि खाममसौ
नस्य पितान्खवा
गौयरऊन्मल प्रो॥
धुजामिश नने॥ ४४
अतनैवृपकाबाल्ये
वनद्वयैदुसै प्रा
मवीद्धकाथ्मामानं
गनिचूनावाष्यनु॥
स्वस्कानि सदनौ॥
[illegible]

गाव का लीन्थ ॥
नवे मस्कुगनिग्राह ॥
सि पायन ध्वुवे न ॥
ध दगव्धकु दृष्टि ॥
कीलिन वामदि ॥
नवे वलं उसप्र ॥
वथेपवि थनु ॥
थ्वा वासव स्वत ॥
वजादग व थक्कु ॥
ॐ नमः कुघल्ला ॥
नमो नीलमुखुवा ॥
नमो निर्मा सद्दक ॥
नमो विशालन ॥१८॥
नमः कनुकमहाय
नमो दीर्घाय ॥२॥
नमः श्रीकाटवा ॥
नमो धावयुवा ॥२१॥
नम श्रीसर्वेल्क्ष्मा ॥
नमो मिद्वानन्द ॥२२॥
अरु कायनम ॥
कु वपुन नमस्क ॥२॥
भूल्लाह हिनम ॥

नमः कालाग्निभू ॥१॥
नमो मद गलकुसी ॥
नपसाद स्यहदे ॥३॥
हाणचकु वुम ॥
कुर्व्यादना सिला ॥३२॥
दिवासूरमनूष्या ॥
वयावला किन ॥३३॥
ब्रह्म णत्रमनूष्य ॥
वाघिर ष्ठ यती ॥३५॥
द गाध्वन नवथ्रामा ॥
वियाववा कीन ॥३६॥
वसा दिवक्सम सो ॥
नवैस्कुवानदासो ॥
सर्ववी तिग निर्ध्वान ॥
गनिव वाव ॥
कुर्व्ये दि नवं ना ॥
ववेघू दिपदा ह्य ॥
द नम कुवार
अघ युरुलिका ॥३८॥
सवा सुर मनुष्या ॥

ॐ नमः श्री गनेशाय
पनुम्यदेवदेवं
गनिशुश्रवसमा ॥१
नपूर्व गोतिविख्या ॥
वकृतं त्वमसविना ॥२
कोलीकान्ह गनिहा ॥
थाहिनिलदायि ॥३
साकं टं रु द्रमितः ॥
ह्वादगमं ह्व उद्दु ॥४
एनक्क त्वानमीवा ॥
देगम्थ्विनगवपा ॥५
कुवानिसर्वलोक ॥
आकूलकु जगद् ॥६
सपूर्व्य त्वमी ॥
समाधाने किमक ॥७
वशिष्ठ उवाच ॥
पुजानायतिः ॥
७७ हे याग समा ॥८
नदाम खि यमन ॥
समाधाय धेनु ॥९
वथ्नकृत्व गिन ॥

सदा कथा जनैः ॥१०॥
या कि नियसूम ॥
वधहुका ढेनी ॥११
हेगं बद्ध दृपूय ॥
दीप्यमानामला ॥१२
विराजसनदाक ॥
आकहु दु विदि ॥१३
हि किकान्ह गनि ॥
हुद्रादगवथ ॥१४
सीहावाक्रिगनि ॥
हमिवानद्रयास ॥१५
गनिनुवाच ॥
पीयरुव नवनज ॥
ध्यासूक्मनपान ॥१६
मंयावदकीना ॥
कुष्णहे नववज ॥१७
वस्कल्यप्रदाम ॥
दानवध उवाच ॥
चाहि गीकेदयिवा ॥१८
सनिकसागता ॥

१ श्री ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ भगवन्कविताग
ष विलोचनचूडानिधे ॥ दयास्ति त्रिपुरसुन्दर्या सन्ति नामसहस्र
कं ॥ सत्वाप्रव चिरं हृदि मनाद्यावलोकनुना ॥ दययाकथ्यतांना
थ तन्ममो द्यालु मर्हसि ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ भक्तनामसहस्रं
तु कथयामि वरानने ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन धृत्वा नित्यं सुबुद्धि

वि ॥ ॐ अस्य त्रिपुरसुन्दरीसहस्रनामस्तोत्रस्य श्रीमहादेव ऋषी।
श्रीत्रिपुरसुन्दरीदेवता अनुष्टुप्छन्दः सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियो
गः ॥ त्रिपुरा सुन्दरी सौम्या, सुप्रसन्ना सुप्रभावती ॥ मन्यान्यासु न साव
श्या, भरुनाललिनाशिवा ॥ ॥ कान्ता कान्तिमती कान्ति, नशिवा।
भामनाहना ॥ कल्याणी सुरुगा ह्रुष्या, पगला हृदयंगमा ॥ ॥

सुरुद्रावमणी दक्षा, साधीव विध्वमङ्गला ॥ वामा ऋषिकावती रु
ध्या, कमनीयाति कोमला ॥ ॥ सौरा ऋदुप्यामक्षवा, वतिनामान
ति प्रिया ॥ सुनामा भालिनी सीपा, चन्द्रधौल्ली सुसीतला ॥ ॥ मन
न्मनामहामाया, मातङ्गी महिवाह्नका ॥ महालक्ष्मी महाशक्ति, मौ
यादवस्वरूपिनी ॥ ॥ महेश्वरी महानन्दा महानन्द विवर्द्धिनी ॥

मानिनी माधवी माध्वी मदद्रवा मुदा कला ॥९॥ आनन्दकन्दा विजया
वैद्येशी विरुद्रूयिनी ॥ सूर्यकौमुदी कान्ता विन्दुनाद स्वरूपिणी ॥
१०॥ कामगा कामकलिनी कामदा कामवल्लभा ॥ सैलभ्रवलिकाव
ली बालमुण्डमालिनी ॥११॥ कण्डरूपा महारूपा रूपा भुवन
रूपा ॥ चित्रा विचित्रा विभेदा स्तुत्या गर्भाकुलप्रदा ॥१२॥ देव !

स्वरूपिणी नित्या निस्मा निस्वसनाशनी ॥ ह्रींकारी कुण्डली धात्री ध
रित्री तृत्तस्ररूपा ॥१३॥ उन्मादनी कामवती सूक्ष्मसत्वा सुबाद्धि
ता ॥ परमानन्दिनी स्वेच्छा परमार्थस्वरूपिणी ॥१४॥ योगव
ती योगरूपा हंसनादिनी [illegible] सूक्ष
त्त्वा वलयवर्तिनी ॥१५॥ कर्णधनिलया शुक्ला वामयद्मनिवा

सनी । बालास्रमालिनी माया, बवंधअववयावना ॥१६॥ विद्रुम
लोचिनालाक्षी, विनिद्रा विश्वनायका । चन्द्रवंद्या विश्ववंद्या, वि
श्वविश्वविकाविनी ॥१७॥ विश्वात्मा विश्वगिवा, विश्वनाश्री
विकध्वबा । मदस्विन्नामदाङ्गिन्या, माननीमानवर्द्धनी ॥१८॥ मा
दिनीमादिनीमाद्या, माहावासामहाणया । मदिनीस्यन्दिनीतारा,

मर्द्दवाकीमदालिनी ॥१९॥ मायात्मिकामदाणवा, मदविघूर्ण
तादना । मूलकूणामहामूला, मूलाक्षवनिवासिनी ॥२०॥ सिंदूरव
कावकाक्षी, मनतात्रिगुणात्मिका । वसिनीवासिनीवाणी, वाबू
णीवाबूणी प्रिया ॥२१॥ भूवूणीवूणीहामा, हामिनीवह्निवासि
नी । सिद्धासिद्धेश्वरी सिद्धि, सिद्धावासिद्धिमातृका ॥२२॥ सिद्ध

ऋद्धिमाता सिद्धिविद्या. सिद्धाद्या सिद्धिसम्मता । वारुवावँघ्नतावँघ्ना. वाम
यीवादिनीवद्या ॥२०॥ वनितासर्व्वनागुर्या. वनयिनीवनात्मिका।
ऊवलाकमलावामा. कमलासर्व्वमङ्गला ॥२१॥ रुग्मदरारुग
क्लिन्नारागिनीरुग्मालिनी ॥ रुग्मदारुग्मनन्दा. रुग्मभारुग्मनायि
का ॥२२॥ रुग्मात्मिकारुग्मवासा. रुग्मारुग्मनिभाथिनी ॥ रुग्मवा.
हीरुग्मवाञ्अ. रुग्मद्यारुग्मवादिनी ॥२३॥ रुग्मविम्बामदक्लिन्ना. नि
त्य ॥ क्लिन्नामदद्रवा ॥ सकलानिष्कलाकाली. कंकालीकालरूपिणी
॥२४॥ कालनीकमलाकासी. कमलाक्षकमलावती ॥ मन्त्रात्मिकामन्त्रम
न्त्रा. मन्त्रगम्यासुमन्त्रिणी ॥२५॥ पुष्पवाणप्रवाविता. पुष्पिनीपुष्प
वर्द्धिनी ॥२६॥ वज्रपर्वमहावज्रा. पूर्वाणभयपर्ववासिनी ॥ ज्ञा

भूवाकेवत्रीराना, रुद्रकालीकुलाँगना ॥ वागीश्वरीनागीयति
गौवी, गिविहागिविसर्गिनी ॥ ३० ॥ वसात्लिकावसासावा, व
सर्वस्वधावसावका ॥ कान्तिनिरुद्दिनीकाम्या, कामनाकामवा
दिनी ॥ ३१ ॥ विद्याविभाति विधिदा विश्वस्याविविक्षा ॥ २१ वि
या ॥ सर्वाङ्गसुन्दरी सर्वा, लावण्यसनिदवृधि ॥ ३२ ॥ वकु

२५

लीवकुलवेदी, वकुनाथावनृहासिनी ॥ महाभस्वाभक्तमयी, मनि
भूवसमाप्रिया ॥ ३३ ॥ नावासुनागनकूणी, नावूणीनाल्लूवृपिनी ॥ ०
कृवायामहायोगी, सुरुदाप्रियदायुणी ॥ ३४ ॥ सर्वदासर्वजन
नी, सर्वाधासर्वजनी ॥ सर्वसिद्धिर्महायायो, सर्वयोगप्रसाधनी
॥ ३५ ॥ सर्वलक्ष्मणावामाहल्ली, सर्वग्रासर्वपावनी ॥ आत्मविद्यामहा

विद्या ब्रह्मविद्यायणष्विनी ॥ ॥ विश्वेश्वरी शिवा नाथ्या शिवा म
च्या शिवात्मिका ॥ अनाहताख्या निलया निरञ्जना निर्द्वन्द्वा निष्कर्मी ॥ ॥
॥ निर्वाणदायिनी नित्या निर्मला निष्कलाप्रदा ॥ ॥ कुला शिवा शिवा शि
वप्रिया ॥ श्री मद्धे शवदायिनी ॥ ॥ पना कुण्डलनी कुण्डी कु
टिला कुटि लालिका ॥ महादनाम्नाधेदाया महिमा महिमा महा ॥

१८ ॥ ॥ शिवंकनी सर्वदाया विध्वंसा शिवपवित्रवना ॥ सत्यमण्डलम
ध्यस्था स्त्रि नाग कनवल्लरा ॥ ॥ सुन्दरि सुमनास्रेयी सुसुन्दा
सा मस्तवर्ण ॥ सुधा सुवासप्रदाया सुधासदिद्धिदायिनी ॥ ॥ सुसु
या सत्यसंकल्पा सत्यावधुन्धिरूपिनी ॥ कुण्डलाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाश
क्ति प्रियर्षिणी ॥ ॥ निलया निलयानन्दा शुद्ध ज्ञानप्रदायिनी ॥ सवला

सर्वलासाना साभ्रवस्यासनस्वनी ॥ [illegible] ॥ यवायवायणमयद्मा. यवनि ७

यवायवा ॥ [illegible] ॥ करी ॥ मतीस्यामा. शिवयानिर्गुरुभ्दक्ष्णा ॥ [illegible] ॥ निनान

न्दानिबरध्या. निर्द्वंद्वानिर्गुणात्मिका ॥ [illegible] ॥ हृदतीहृदनीब्राह्मी. ब्रह्माणीब्रह्म

दायनी ॥ [illegible] ॥ धृतिस्थितिम्मीतिर्मेधा. सुधाबुद्धि ॥ [illegible] ॥ विस्मृता ॥ [illegible] ॥ सूधान

न्दासूर्यवाधा. सुर्द्धसीराग्यवर्द्धनी ॥ [illegible] ॥ निनत्ययानिनाकाना. उक्

नीरक्तनीवनि ॥ [illegible] ॥ रागयाकमलावेद्री. ज्ञावनीक्षारुनीस्तु नि ॥ [illegible] ॥ कूलगा

कूलमध्यस्था. मध्यनीभिन्नतस्थिरा ॥ [illegible] ॥ कूलाकीर्ति कूलानन्दा. वाधवा

स्वादिनीसती ॥ [illegible] ॥ उमाप्रियाब्रह्माल क्ष्मी. नकूलाकूलदायनी ॥ [illegible] ॥ विश्व

त्मा विश्वयानी. विश्वसयाविनायका ॥ [illegible] ॥ ध्यायिनीनादिनीतीर्था.

साकिनीमाम्साकिनी ॥ सत्मानभूयिनीदूद्दा. शंकिनीगवर्गकनी ॥ [illegible] ॥

सूक्ष्मनागीसूनावासा, सूनावधासूक्ष्मध्वनी ॥ सूवर्णवर्णसन्नीलि जून्नू
णावर्णनूपिनी ॥ [illegible] ॥ ललनाङ्गीवचनप्रष्ठा ॥ स्वपिदास्वच्छरूपिनी।
सास्कवीनन्दनीनन्दी, नन्दादनिदरूपिनी ॥ [illegible] ॥ निर्वाणभरासूना।
मूक्ता, महियासूनमर्द्दिनी ॥ विश्वसाक्षी विश्वरूपा, विविश्रयो वि
श्रयनी ॥ [illegible] ॥ जयनी विश्वजननी, विश्वत्रिस्थत्रिलयिनी ॥ ब्रम

रंध्रनिलयानिष्ठा, निर्गुणगुणवन्धनी ॥ [illegible] ॥ कलखारुवनगभनी
रुवनरुवनात्मिका ॥ विभूतिभूमिबाभूति, सिद्धिसिद्धि तिका निणी ॥
[illegible] ॥ श्रीगानीसाध्वतीसेवा, ज्मर्मिलीसमवायनी ॥ वानीरावनी
रासा, राखिनीभूतरावनी ॥ [illegible] ॥ रंध्रनिलयापद्मा, सूवाद्धलीसू
वात्मिका ॥ अविन्दुरूपा विन्दुमा, विन्दुविन्दुविभूषणा ॥ [illegible] ॥ सूक्ष्म

ज्ञावतीयूथ्या । स्वाधिष्ठानसमाश्रया ॥ ॐ कन्दूयापवानन्या । स्वात्मस्था
चिन्मयी विना ॥ [illegible] ॥ ॐ कुनिध्यामहानन्दा । मदघूर्णितलोचना ॥ ॐ न
न्ध्यानदूर्णी काका । मदनकामनाश्विनी ॥ [illegible] ॥ ॐ नकानकमहिमा । नि
त्यकान्तिनिरस्त्ररना ॥ ॐ विद्याकनविद्याधर्षा । विद्यविनिस्वरूपिनी ॥ [illegible]
जगत्मयाजगत्माता । जगत्कालाजगद्भुवा ॥ ॐ ध्यानियोगिवानन्या । कु

:

ॐ स्कारानुरूपिनी ॥ [illegible] ॥ ज्ञानगम्याज्ञानमूर्ती । ज्ञाननीज्ञानरूपिनी
॥ खेचवनाखेचवीमुद्रा । खेचवीयागरूपिनी ॥ [illegible] ॥ ॐ नाथनाथा
निर्नाथ । अथानाथानिरूपिनी ॥ ॐ मृत्युदवासूक्ष्मकना । सूक्ष्मविद्
समस्थिता ॥ [illegible] ॥ काकिनीकमलावासा । याद्विनीयानरूपिनी ॥ मधव
स्तुधीनमूरवी । नयिनीदीयनीङ्गला ॥ [illegible] मकवा वाना । सूभावूयास्तु

क्षमयी । दरिद्रा दरिद्रबाधाना दरिद्रबाधाशमक्षमा [illegible] । मंगल्या मंग
लाकारा महामङ्गलदेवता । मङ्गलदायिनी मान्या महामङ्गलरू
पिणी [illegible] । कुसुमकाम्या महाहासा शास्त्रनीरूक्तरूपिणी । कालाय
नीकलावासा पूर्णकामायगर्भिनी [illegible] । नादवासा मनिलया ना
रायणमयी दना [illegible] भक्तमार्गविक्षनज्ञा निनधात्मप्रिरूमिका [illegible]

सुना ।

श्रुतकर्णा क्ष्म [illegible] प्रायायादृ [illegible] । बुद्धिदा कामरूपिणी ६६८ ८
दा लोनयामानदायणी [illegible] । समासानासवभासा सुखदी ६६६६
सधूमदिना । निर्वादायीक [illegible] सृष्टा गर्भविश्वासानयामता [illegible] । सर्वेद्र ।
वासूनानाक्ष्म वक्रसर्वगुरुगुणा । स्तुति स्तुतिमयी स्तुत्या स्तुतिरूपा स्तु
तिप्रिया [illegible] । कामदुघा कामकारी कामघ्नी कालरूपिणी । विश्वयती

विक्रमयो विधिसू विश्ववन्दिता ॥११२॥ विश्ववंद्या विनाविना विश्व:
प्तीविश्वरूपिनी। शीलरक्षा शीलवती शीलस्था शीलरूपिनी ॥११३॥
डुतियानीघतक्षानी डाकिनी डाकिनीप्रिया। विक्षनीवध्रगुठिका नि
र्जना निर्जरूपिनी ॥११४॥ जालंधिनीजगद्धात्री जगनीजाद्वलीजनि।
गाकिनी सांवसासावा समूल र्कुसदाशिवा ॥११५॥ स्फूर्तन्तीस्फूर्तना।

कारा स्फूर्तिस्फूर्तनरूपिनी। शिवदूती शिवश्लिष्टा शिवलशिवरूप
दा ॥११६॥ नाकिनीनमनीनामा नजनानजनी क्रिया। किंवक्षुनाविनोद
ष्टा विश्वश्रीविधिवल्लभा ॥११७॥ विश्वातनी विविप्रार्थ्य विश्वस्थ्या विश्व:
स्फूर्तिदा। विश्वात्म कानिकाविस्था विश्वयातिर्विवर्जना ॥११८॥ विश्व:
शौनिर्मोहराघानि कर्मयानिप्रियंवदा। हाकिनीनमनीहामा वाहिनी

श्रागकारिणी ॥ [illegible] ॥ सावाण्यपदा ॥ [illegible] ॥ कवाण्कनागथ्या ॥ [illegible]
कार्वी ॥ मनीधया ॥ यणीयागिवश्वनी ॥ [illegible] ॥ कामप्रियाकामदूगी,
कामगियोलयस्किना ॥ रूर्द्धत्मिकानूद्र नित्या, नूद्रकन्यानरुजस्वना ॥
॥ ॐ कानयातगानस्का, रुनवीक्लादिनीह्नना ॥ यालद्धहानूगेनाथः
सूक्ष्मविन्दूसमनूना ॥ [illegible] ॥ काकिनीकमलावासा, यादवीयानतूपि

नी ॥ मघवक्लुर्ध्यानमूरवी, नयिन्नीमायिनागिवा ॥ [illegible] ॥ कमलाकाम
वक्रगी, महासनविमाहनी ॥ [illegible] गुकानूगुकस्थ्का, ॐ कावीयक्रनायि
का ॥ [illegible] ॥ वयक्लानीनूद्रवामूणा ॐ कानीभोगकास्वना ॥ गनूलीगनू
नीउद्धा, स्वागनाब्रह्मवारिणी ॥ [illegible] ॥ वाहिनीहका, कौ:
वनीकमलप्रिया ॥ वश्णध्वावगुनूया, प्रवनवगुमान्नेका ॥

॥८५॥ कंकालयष्ठीकालिन्दी कौमारीकालवल्लरा । यनानन्दयाप
नस्का हीमनूयारुयायहा ॥८६॥ कविद्यासखानुजा ..काण..न
दयिता । महाकुंभाकरुप्रीता कंकालकुलिनर्यिता ॥८७॥ सर्वव
र्णसुवर्णोकि यनाद्दनमहाप्छवा । धान्यर्केवानागवृद्धि व..मा
मानवात्मिका ॥८८॥ दायगोककसवाउस्का निर्वाणसूखदायनी ।

आदिसर्वाङ्कधसर्वा श्रीकृष्णस्कानमदिनी ॥९०॥ याबालावाक
वावकी स्वमागामवनायका । आकाशलिंगसंभूता यक्षसम.न
सात्मिका ॥९१॥ सास्वतानूपसिद्धाद्धा कपालीकुलनर्यिता । वद्या
ननुमिरानव्य वेणुमुद्रासुनर्यिता ॥९२॥ गोष्ठनीयान्नि..ा किरव
लुसिद्धवंदिता । ..ुयावनिलया भोलिमार्गकन्यका ॥९३॥ ८

वह्निमण्डलगता ऽनुवनाद्यानवासिनी । यादृकाक्रमनताध्धे, यावावस्था
यनाजिता ॥ ८४ ॥ अवधूतायनातृष्णा, दिव्ययानवसासेवा । ऽन्नमया
वगावनी, विकूबूघ्रसमर्चिता ॥ ८५ ॥ ऽन्नमयदहानसिका थान्नवीग
नितर्पिता । सकाननवल्लीवीजा, वक्रमलायिकाविणी ॥ ८६ ॥ क
वक्रनायिकाऽऽसा, यनाविद्याविमालिनी । भकिरुनीसंरसविद्री, स्त्री

ध्यनभिन्दूतर्पिता ॥ ८७ ॥ कमंकवीसमास्वासी, सुप्तीताविन्दूमालि
नी । वर्द्धनावर्द्धितयाला, वाबूरवल्लाभ्रक्षाविणी ॥ ८८ ॥ मूर्धानामक
दयवा ऽऽमिनीऽऽस्वद्भूयिनी । ऽवाकिर्वर्णाभूमा, धूंगवीनागिनी ।
शिवा ॥ ८९ ॥ सलराद्भूलराऽऽस्याम्नी, मरुसाम्नीनखणिनी । गलक्ष्मी
वाऽऽलक्ष्मी, रंगलक्ष्मीकपालिनी ॥ १०० ॥ दवयानिरंगवती, ललिता,

नादेनध्वनी । कूटातीतकामहावती । वर्द्धिनीकलुमालिनी ॥ १०१ ॥ सं:
यानंद्यासयारूढा वनितानंकुवर्षिणी । मन्कानमन्कनाजीवा ग्रमिकास
वेरुक्मणी ॥ १०२ ॥ अग्निजिह्वाकरयाधीवा शूलिनीदुष्टनासूदा । सुवर्गा:
कालदूतीव दवकार्यास्वनुधिनी ॥ १०३ ॥ कुकिनीगरिखिनीगुर्वी वा:
नादीकूरुज्ञानिमिका । उमतिमिकायध्मवती । धूर्जटीचवत्र भविणी ॥ १०४

॥ दर्वीस्तुयून्यापूता मन्त्राणांवूयप्रविणी । जकिणीकु[illegible]निनीसू[illegible]लि:
ध्वणीयिवन्दनी वी ॥ १०५ ॥ कानणीवामदेवी । [illegible]नीयवन्दनः
न्दिनी । श्रीकालीवसलाडका । ॐकारवीचमर्दीगनी ॥ १०६ ॥ वज्रिणीद
ष्ठिनीउग्रा । मूर्चीगायत्रीगर्वी । यज्ञकजामयासवि । यूष्ठुयी निवास
नी ॥ १०७ ॥ मनोन्मनी ह्रीवर्णा च यन्त्रस्कारीमहागिनी । सर्वविघ्नानाशनी

ष्टु‍ध्याग्नीनादिनीनवा ॥ १४ ॥ कदानणीकालवाश्री मध्यमालानस्वा:
त्मिका । विरुवस्कारुवङ्गया मदश्री धूम्रलावना ॥ १५ ॥ मातंगीयीवि
निलया दम्भवबाधिनिचूची । ॐ बूधिसखिनीवधू वर्धीवध विमाकि
नी ॥ १६ ॥ सावित्रीसम्मतिवीर्या कमानूमामहादया ।
गुल्लघ्नवीगुणककावा सूगलम्गुणयूखनी ॥ १७ ॥ गोर्म्भोताग्निजा: ।

साध्वी सर्वाणिसर्वमङ्गला । वकाकिनीसिद्धिकन्या काहासूपस्वबू:
यिनी ॥ १८ ॥ सुवकनूपिनीवका मार्गनीयीवनूयिनी । दकाम्ककाय:
गादकी मदनामदना ... नूमा ॥ १९ ॥ विष्णाहनिद्राधनणी अवि
णीविध्यवामिनी । वसूयानिर्वसूसूता वसूधनावसूप्रिया ॥ २० ॥ न:
स्पदागर्भदागुच्छा सपिनीत्रकवात्मिका । नयनीतायनीदीक्षा साध

नारामवायणी ॥ ॥ स्वसिद्धकिन्नरीबाला कपिलाविस्फुलिंगि:
नी ॥ अश्विन्यमीतिथिरूपा बलिनादयवाहनी ॥१८॥ अनाहताविरू:
विद्या मानसी यववाहनी । विद्याधरी लोकधात्री शिवमानसरूपि
नी ॥१९॥ त्रिपुरा सर्वतोरुद्रा त्रिकालशक्तित्रयात्मिका । त्रिकोणनि
लया त्रिस्था त्रयीमाता त्रयीतनुः ॥१२८॥ त्रयीविद्या त्रयीसारा त्र
यीरूपा त्रिपुष्कला । त्रिकादनस्था त्रिविधा त्रिस्थना त्रिपुराम्बिका ॥
॥१२९॥ त्रिविन्या त्रियज्ञरूपा त्रिमूर्तिस्त्रिपुरेश्वरी । त्रिदिवा त्रिदशाग्रम:
नी त्रिकूटा त्रिपुरवासिनी ॥१३०॥ त्रिखनी त्रिशक्याख्या त्रिपुष्पा त्रिपुरेसा:
लिनी । त्रिचक्रविद्या त्रिरूपा त्रिमाता तत्प्रमालनी ॥ ॥ इति त्रिपु
नसन्ध्या मन्त्रनामसहस्रकं । कथितं तवदेवेशि सहस्रं सर्वकामदं

॥ २२ ॥ सर्व्वपापप्रशमनं सर्व्वतीर्थफलप्रदं ॥ सर्व्वसम्पत्करं देवि
सर्व्वदारिद्र्यनाशनं ॥ २३ ॥ सर्व्वरोगहरं पुण्यं सर्व्वपापविनाश
नं ॥ एतन्नूयतद वि पूजयित्वा सुमध्यम ॥ २४ ॥ सिद्धिर्भवति काल
स्य सम्पदः कामरूपिनी ॥ आयुर्धनवर्द्धनं तस्य विद्यालक्ष्मीसु
पुष्कला ॥ २५ ॥ प्रशंगत्य सर्वसिद्धिदा निर्मामिर्यात्मिकाजियगू ॥

इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसम्वादे ॥ त्रिपुरसुन्दरीमहामन्त्र
नामसहस्रं संपूर्णं समाप्तं ॥ ॥ शुरीरक लहुसावैदा ॥
सम्वत् ६ ... भाद्र शुदि १० श्री श्री जयअनंतमल्लदेवयश्य ... ब सस्र
... श्रीत्रिपुरसुन्दरी महामन्त्र नामसहस्र लिखितं ॥ ॥

ॐ नमानयवतवासूयवाय ॥ वृक्कलाकादिक्स्याप्पं नानर्थंरुगव
नुप्रियं दक्कानवसरोयान सुयक्कम्नूनथामूया ॥ ॥ यथ
॥ वृक्कक्कनयकावन सर्वयायै ४ यमूच्यन ॥ विनायानन वसा वि
सामीथिविनामरवे ॥ १२ ॥ दवाक्षियवयवं स्किनियसिणद्दर्वं ॥
कथमानायवयन्द्वं ऊंय क्षानयनायणं ॥ ॥ ॥

ॐ यमवयूनायूरू ४ याद्देस्यायवमष्कन ॥ यदूवावगृणूर्क्षत वृध
यानिसूविस्कनं ॥ ४ ॥ केलागिरवर्वामानं दवयदर्वङ गच्छुनं
॥ प्रणिपत्यमहादव यच्चपृक्कदूमास्त्रियं ॥ ॥ ॥
रुगवंस्त्र्यिनादव सर्वह ४ सर्वेपूजित ॥ वल्लिमसमर्हितादवे वं
स्कस्तूच्यायिके नयि ॥ ५ ॥ वलालरुगं किमनां सिद्धिसर्वविनयद ४

कृऊरन्म मृत्यूनहितः स्वयम्भूः सर्वशक्तिमान् ॥ ७ ॥ सदाश्रयसि किं
स्वामिद्धिश्वमामदनानक ॥ ५ ॥ तथव्प्रारसिकस्माहं जटि लारुसमृद्ध स।
॥ २८ ॥ ८ ॥ किश्वाउयसिदवे। श्री मूरुलहिम ॥ अनुया कादि
यातस्मि, गर्ल्हं कथयसुव्रत ॥ [illegible] ॥ नदिक।
स्याधिकथितं, गोपनीयमिदं मम ॥ किंवक्ष्यामि रुद्रना, देवि कासि

प्रियासि मे ॥ २० ॥ पूर्वासत्ययुगे देवि, विशुद्धमनया खिला ॥ प्रजानि
विष्कुमवेक्ष ज्ञात्वा सर्वश्विनश्वनं ॥ ११ ॥ प्रयान्ति यवमानु द्वि मेदि
कामूस्मि कीर्त्यवा ॥ यान्त्यायाम सर्वं बद्धयाक्षणवर्जितः ॥ २२ ॥
न मार्गनियिस्य यद्युक्तं विना हानि वक्ताकुण्ठ ॥ मलूर्वादयि मेरुत्य द।
वाविष्णुवद्विर्मूखा ॥ २३ ॥ वद पूर्वालेः सिद्धान्ते, किं पुनर्द्वितोन्क।

थंतस॥ नन्निश्चयनाधिगच्छन्ति किं तत्वं कियनंथदं ॥१४॥ तुल्लायूनू
षयानांथे नधसमाधिरिति स्पर्शे॥ नानाणसूरियागादि ति ... स्नाता।
दिरि॥ स्थिय ॥१३॥ गयाग्राद्वादिति॥ त्रिष्टी बद्धयाभद्दिर्जीये॥
मयारिनूपेन्नियसे, वैसैनूवदयादिरि॥ ॥१८॥ तुनुस... ले॥ सपेि॥
धर्मविक्तुद्गमावित्ते॥ ज्ञानाध्मनादिरि॥ सम्य, श्रावित्तेजन्मेज नरि॥

॥१॥ नयान्तितत्त्वं तत्र विज्ञः सर्वं ... ॥ सर्वभावेवनाश्र
त्य यूनाण्यूनूथालम ॥१६॥ जूनन्यगतथामन्त्यो, गगिनायियनन्दिन
॥ ज्ञानवेनाथवहिता, ब्रह्मचर्यादिवर्जिता ॥१७॥ सर्वधर्माजितावि
श्रा, क्षमिमावकज्ञ्लावा॥ ॥ सूरवनयां गर्भियान्ति नगासर्वं विधम्मि।
का॥ ॥२०॥ समलेव्यसनतविन्न, विसालेध्यानजाउविग्न॥ सर्वविक्षिनि

...नदय,नव, केकरना ॥२१॥ कलुषकारि किं देवै पूनादृष्टा
निवेहसं निर्दयी विष्णुनाम्नैव, यथेष्टं यवनागता ॥२२॥ अज्ञलदावा
त्मनः यूजी, सम्यग्मनाभिलाषनि मयावास्माद यिप्रष्टं, वाञ्छताहि।
कृतात्मना ॥२३॥ हन सा क्षाज्ञगन्नाथ प्रसन्नाहकवत्सल जंगम
स्थैनात्मनैवैता, यूज्यमासकेगव ॥२४॥ दवान्यद्दिन्न द्विजान्ह।

व्य,कथांश्चे कनूणमय यदृतिष्ठुक त्रैलोक्यसवबाव।
न ॥२५॥ वक्रादय सूनासर्व प्रसादानाम्भर्व अवन मथावाव
यथमर्त्ये पूछ एप्पाक विद्यासि ॥२६॥ बोमावाक्ष्यययथासक्षा, ए
हिद्यामिवनमाव दायवादीयूगत्वा, मानुबाहिश्च ॥२७॥
स्थागमे कल्पितेष्व, ऊनात्माद्विसूक्ष्वा कूनं, मा मयययनस्यात्

स्थिवयाल्हवाल्हमा८ ॥२८॥ मनसंयणियस्याक्षु नवान्वयिवसघ्वनं ।
श्रीमहावीरउवाच ॥ त्वत्क्रुद्यासहुत्तुच्च, यार्थनामेक्कपद्धन ॥ नयून
स्वदविज्ञान, कल्पमाद्विगतिनपि ॥२९॥ यस्मात्मयाक्रतास्यद्वी ।
यविरस्यांकथंहव ॥ विमुक्त ॥ सर्वेयाथेन्च, स्तमकथयसूवग ।
॥३०॥ नश्चन्ति सर्वेयायानि, गम्भवदसूवश्चवन ॥ गदाहृदवागावि

द्या, ममसीत्ययथातर्थं ॥३१॥ श्रीगौतमउवाच ॥ सदानामसह
ईमि, यावनमित्यगावर्ह ॥ तत्यमनूविनभिक्षा, सर्वेष्वन्वयिदिक्कसि
॥३२॥ श्रीमहावीरउवाच ॥ ममवगवसानित्यं, रुजामिस्कामि विन्कथ
नतना द्वितीयसहिमा, जगत्पूज्यास्मियाद्वेति ॥३३॥ श्रीगौतमउवा ।
च ॥ तन्मेकथयप्रवग, यथाहमविगच्छन ॥ सर्वेष्वना निवृयामा ॥ ४

तव स्मासि [illegible] श्रियः ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ साधु साधु त्वया पृ
ष्टं [illegible] नाम्नां सहस्रं वक्ष्यामि मूर्खद्रितात्मकं कि [illegible] द
॥ २७ ॥ ॐ अस्य श्री भगवतो विष्णोर्नामसहस्रस्य महादेव ऋषिः ॥ अनु
ष्टुप् छन्दः ॥ श्री वासुदेवो देवता [illegible] बीजं [illegible] शक्तिः
[illegible] कीलकं ॥ [illegible]

॥ धर्मार्थकामदेवप्रीतिर्नृकेवलं मम श्री वासुदेव नाम सहस्र नि [illegible] ऐहि
कामुष्मिक सकल [illegible] जपे विनियोगः ॥ अथ ध्यानं ॥ वि
ष्णुं [illegible] किरीटाङ्गदवलयगलाकल्प [illegible] श्रीवत्स वक्षो
मणिमकुट [illegible] नमहाकुण्डलामण्डिताङ्गं [illegible] दमम
[illegible] विद्यात [illegible] नमामि

॥३६॥ वाग्धयः । संन्यासविद् मङ्गलसद्भवश्री नानायुग । सनसिजास
नसंनिविष्टः ॥ व । सूनवान्मकेन कूलुलकाम्कैवान्दी । हातीहितं भय
वयूर्द्धतं स्वैवकः ॥ ॥३७॥ वासूदवयनंद्विष्म । यवमात्सायव
यव ॥ यनंधामयनंक्षाति ॥ नतिवैयनंयदं ॥३८॥ यवाभिव ॥ य
वा धयः । यनंक्षानंयवभिति ॥ यवमाथंयनं गुणः ॥ यवाक्रि ॥ य ।
१३

वाद्यय ॥ ॥३९॥ यवाधकान्यनंध्याम । यवाद्धि ॥ यवमंध्वव ॥ निवा
मयानिर्विकारा । निर्विकल्पानिवाधय ॥ ॥४०॥ निवकुंभानिवाल
म्बा । निर्लेपानिवयग्रह ॥ निर्गुणानिष्कला । नमा । रूयाविक्ष्यावला
च्युत ॥ ॥४१॥ अनीन्द्रियामिताया । नीगानिहावद्या दाय ॥ सर्वेङ्क
रे । सर्वेग ॥ सर्वे ॥ । सर्वेय ॥ सर्वेकावन ॥ ॥४२॥ सर्वेगास्त्रासर्वेसो ।

सह

श्री, ह्वध्रु ॥ सर्वेश्च सर्वद्दक् ॥ सर्वशक्ति ॥ सर्वसान ॥ सर्वासर्वेश्वा
मूर्व ॥ ४३ ॥ सर्ववास ॥ सर्वव्यूय ॥ सर्वादि ॥ सर्वदेव ॥ सर्वक
सर्वार्थ ॥ सर्वेशाकृद ॥ सर्वकारणकारण ॥ ४४ ॥ सर्वलिंग
यक, श्रद्धसर्वत्रवत्र्वद ॥ ओ श्रीलामहाविष्णु, सर्वाद्यका:
महाहवि ॥ ४५ ॥ नित्यादितानित्ययुक्ता, नित्यानन्द ॥ सना:

तन ॥ मायायतियोगयति ॥ कैवल्ययमितात्म ॥ ४६ ॥ ना:
मोहत्यूजनातीत ॥ कालातीतारुवातिय ॥ पूर्ण ॥ सत्य ॥ सूद्वनू
द्ध ॥ स्वनूथानित्यचित्मय ॥ ४७ ॥ श्यागुह्यिश्यायागमया, रुवव:
कमावक ॥ पूर्वाण ॥ पूनूव ॥ सत्य, ॐनन्यपनमवन ॥ ४८ ॥
व कवेद्यादूष्ट्या, मायनयविवर्जित ॥ वक्ष विघलयो ॥

सःसकाग ४ स्वयप्रिन्तु ४ ना ९८ ॥ सर्वोपद्रवनाशनं ४ प्रणवं ४ ना ९९
सर्वेत ४ सम ४ सर्वानवद्याद्यु ४ प्राप्य नुवाय नमस ४ यत्र ४ ना १०० ॥
कृ... ४ सर्वेसंश्लिष्टा वाद्यमालचना तिग ४ ॥ सद्व चेतं ४ स
र्वेहन ४ कालसर्व नयवक्त ४ ना १०१ ॥ अनन्तप्या ४ सर्वेगति मेदान
सादूनासय ४ मूलसप्तातिनानव ४ सूक्ष्मा विश्वमाह ४ ना १०२ ॥

महामाया विश्ववीज ४ यवनशक्ति ४ सूर्येकत्व ४ ॥ सर्वकामफलनकाली
ल ४ सर्वद्भूतवशकृत ४ ना १०३ ॥ अनिरूद्ध ४ सर्ववीजा कामीकरण
मनस्याति ४ निरूपाधिशिवसाक्षी ... कव ४ सर्वेनियाजक ४ ना १०४ ॥
ब्रह्मा प्राणभवन ४ सर्व ... ४ ... ४ ... ४ स्वा
मी सूक्ष्मविश्वरूप सूक्ष्म ४ ना १०५ ॥ अक्रयोनि ... अनान ४ सामाग्रि ;

ति। ता ग्रागा हैं नव लर्जक ॥१०॥ [illegible] नवकुशुण्यथृप्ये यमानि४का
लसहय [illegible] कुं।ध्वथवा वृस उहो। थरिवा ना ये दूकु क ॥१०५॥ सर्वे
कोथासमृ।गोत [illegible] कालमृ शु निवर्क [illegible] मो [illegible] ॥३ मदे
मृ [illegible] घ्रकत ॥१०६॥ गलेगआठि द्वयो [illegible] हलं [illegible] द्वयो ह
थ वका [illegible] देलौ। जगहृयथ श्रीकक ॥११०॥ समकदू [illegible] तिग्राग ३

931

उग ङकक कङ कका ४॥ ३ प्रलोम्ब नमाजवि ४ कालमूर्ति ... ङ क का ४॥
१।१॥ जूनकायूयधा ... चूर्सिंहावीनरुद्र जि गु ॥ योगिनी वक्रतुण्ड ग
४ ग क्रा वियधुमसि तुक ॥१।१२॥ कूष्मानानायलोमश । तूयगङ ६६ व
वाह न ४॥ भय वृषभिवेगाग । दृष्टगकिसदस्रतुक ॥१।२॥ जुनगी
वन्दगदधा । वामावामारिवि लहद ४॥ महालिव ४ गिवाहृदोजेनवे

वेकयाल वृक ॥१।१४॥ वीनवक्रम्बवम्बुज । दिव्यमाहनयन ४॥ लो
वीसौलाग्यधामोया । निश्चिम्मायाहयायह ॥१।१३॥ वक्रजामथाव
क्र श्रीमयधुययामय ४॥ सूत्रक्रलोवलिधूसा । वामनाःदितिदू ४ स्व
हा ॥१।१६॥ डयस्राहृयतिहिक्र ४ कंष्मयान्वयमधुन ४॥ १०० वलिः
स्वाहायद ४ सर्वधवविग्रान्नयाः चूम ४॥१।१७॥ नुरुमसिथः

याद. श्रियपद्मश्रि विक्रम ॥ ध्यामयाद ॥ स्वयायाद ॥ ठयवि मिज
गरुय ॥११८॥ वृक्ष गाघरिवं द्याश्रि ऊगधर्म श्रियावन ॥ अवि
ग्राहुत विस्काना विश्वदृक्षामहा अल ॥११९॥ नाऊ सूदूयवा गस्थ
ष्टुयनिनिनाहन ॥ याया प्रस ॥ सदायूष्ण अ श्याग नि यख ष्ठ
ने ॥१२०॥ यूनिमारिवलयंवग्म. श्रिधार्थवानवामसहू ॥ खमा

याश्विलगुकाता. कुकविकाम लि ॥ सका ॥१२१॥ यवद ॥ कार्ले
व. योषि नाजवायुप्यवा न ष ॥ विश्व ॥ मिनावा वा दकाय
यामूनी ध्रुव ॥१२२॥ यनभक्ति सुदा गिष्ठ यागमनन्द ॥ सखान
प ॥ समस्तेदानि गजाह. यनमा मृन याद ॥१२३॥ सूनस्वथा
गर्ड वर्त्न. आगमाकं सूख्यु ॥ यमयग्निकुलाधिश्या. वेणूकाहुत

णकिहता ॥१२५॥ माहहस्यादि निर्गुण ॥ स्कन्द उ क्रियुआद्य

द ॥ सर्व्वकृतान्कहदीन दर्यदाकालेवीर्यउत ॥१२३॥ सयकदीया

वनीयाता लिवाचार्यय ॥ सुद ॥ कीमऊयु बामध्य लिवावार्यक

विष्णू ॥१२६॥ लिवाखिल ॥ ज्ञानआया हीआयार्य लिद्भिवत ॥

ज्ञानवार्यपुहिधि उत्र मवाह्वतानृ उ ॥१२७॥ उदिवीयतथा

मूर्ति त्रैधवर्यकल्पकिल ॥ मनु ॥ प्रद्यु ॥ मनोमनु भृहीयाम्हव

शविनाट ॥१२८॥ आदिनांज ॥ क्षितियिता सर्व्वनलेकयाहृहेतन ।

पृथूर्जसोहीकक्षा नी ॥ प्र ॥ वालि ॥ स्वयंधृति ॥१२९॥ जगद्देलि

पुदध्रुव [illegible] याद्याम्नु ॥ क ॥ सनकादि मूनि [illegible] ।

किवर्द्धन ॥१३०॥ [illegible] के १४ सु

येविंश ध्वजानामा राघव १ सद्गुणोल्लव १ ॥ ३१ ॥ काकुत्स्थो वीर नाम
र्थो राजधर्म्मधुरंधर १ नित्यस्वस्थाशय १ सर्व्व रूप्याकृनिगुणैकधृक्
॥ ३२ ॥ नरवर्त्तिनगर्भो धर्म्मो धर्म्मकामहानिधि १ ॥ सर्व्वोपद्रवशमये
सर्व्व मस्त्रास्त्रमवीसवान् ॥ ३३ ॥ जगद्वशीयाराधि १ सर्व्वन
त्वाद्ध्यात्रय १ समस्तधर्म्मस्य १ सर्व्व धर्म्मदूसाखिलाखिल ॥ ३४

॥ भूनौद्रा ५०० ज्ञानविज्ञान याववहज्ञाकमानधि १ सर्व्वपदस्तदिंशं
श्रद्धा हर्षणाकाद्यनाकूल १ ॥ ३५ ॥ पितामहाद्यकसामाख्य १ सय
त्राणनिर्णय १ गुणादर्शधिपि प्रिय, शिवस्याद्वोजटाधर ॥ ३६ ॥
चित्रकूटाश्रमनताहि जगदीशावनचर १ यथेष्टभाभाषमानोऽस्मो द
वृन्दावनयाक्रिडा ॥ ३७ ॥ वृक्षाद्यादिनन मौका, मानीविष्णुवि

नायका ॥ खङ्गमायकृताञ्जल्छ दण्डकावत्ययावन ॥ १३८ ॥ वस्तु दङ्ग

सकृश्राय नक्षाणि कगणे कहृत ॥ खनाविस्त्रिगिवाकृत्वा दूवल

ध्नाउनादेन ॥ १३९ ॥ उटायुधा भिगदिता ॥ सर्वस्वया

जनाढ ॥ लीलाध्वनू ॥ काष्ठयार्थ्वे दुन्दुयष्टिमहावय ॥ १४० ॥

सकृतालव्यअहृष्ठ ध्वस्मयातालगानव ॥ सुग्रीवनागृधाहि

शा मनसेवाहृयस्य ॥ १४१ ॥ हुङ्कदुमुष्टयगा ॥ समस्तकपि

यहृहरा ॥ सनागयेहवालेक वाकूलीहतसागव ॥ १४२ ॥

मस्तककोटिवालेक शुष्कनिर्दग्धसागव ॥ समस्तहनुवा पूर्वैके

वर्द्धसतुयेगानिधि ॥ १४३ ॥ जूसाध्यसाधकालिका सहलाक

मेलकम ॥ ववदफउगच्छेल्य धीलस्यकूलजानहतू ॥ १४४ ॥

नावणियु२ प्रकृस्कृजित्सूरि कर्तृ लिदूप्रकृ२ नावले कमिनस्कुला
गधिकन्द्र तनाथक२॥१२५॥ स्वर्गो स्वर्गेस्य विस्कदी दवन्द्रानिन्द्र
गाकन२ नक्राय ववकद्वम्मी धर्मो विषु२ यून्तूत२॥१२६॥ ना
तिमाषादगास्यानि दलनाथा विनीवल२ सूपदहिमूनाल
प स्वसेचाजीवनेकहन॥१२७॥ दवत्राक्र नामेक अनास।

धर्मिनाद्विन२ वृक्षनूदन्द्रस्नूयानि धिपाद्विनसा तिप्रिय२॥१२८॥
जूयाक्षुरविजनाजाप२ सर्वभूतमनाहन२ स्वामाडुत्य हूस्यादर्गा
हीनाहुकसप्रिय२॥१२९॥ स्वयकादि नायदर्गा हीनाथाधि
कसाधक२ वध्याजानू विनहक हालकाखिलडुल्लहेन॥१३०॥
याद्वैयाधिकनूकाला प्रियायक२ स्मनानि जितू२ माकाक्रूण।

लवणाख्यं । त्रिगणायनवाङ्गिन ॥ १३० ॥ कोसलेन्द्रावीनवाहू ॥ स
स्यार्थस्य कृसादयन ॥ सवनसधानविहूनं भुवनामंगुलाजय ॥
१३१ ॥ वृक्षादिकामुघभानिघ्य समानार्थहितदेवता ॥ वृक्षलाकान्मि
वाजुला ... गणवाघ्राभिसत्कय ॥ १३२ ॥ स्ववीतगदहरुघ्यावि
ष्णिनाथो ध्यायनेक कूर्म ॥ नामद्वितीय ॥ सोमित्रि । लक्ष्मण ॥ प्रहर्त

स्वजित ॥ १३३ ॥ विश्वक्सेनो ... याद्वकानाथनिहन्ता ॥
कृतनितीसक्ष्मगर्भः ॥ काठिन्यालवनान्तक ॥ १३४ ॥ कृष्णव:
घनाजायु ध्वदगंगोभिधायति ॥ नित्यामृतकवाधव । नकविये
ङ्गदवन ॥ १३५ ॥ सूर्योविष्णु ॥ सूनाजीवा दक्षिणत्र्यादिजत्रि:
य ॥ द्विनमूर्द्धायदग्न्याक्रौं ॥ ...माञ्जस्थायितामव ॥ १३६ ॥ वि

श्चार्थलाभनूद्धार्को निवल्कलाक्कलाकृति ॥ वाजयया द्विनामा ने. धुद
धर्म्मो यथायथं ॥ २१८ ॥ सकदीयावती साख्या त्यसंतास वैसिद्धि
वाट ॥ विष्णुप्रकाशित ज्ञान. आलोमाहत मिश्रता ॥ २१९ ॥ देवहूत्या
त्मजे ॥ सिद्ध ॥ कपिल ॥ कर्दमात्मज ॥ योगस्वामी ध्यानसंग. सगना
त्मजारन्मखदृ ॥ २२० ॥ धर्म्महिथस्य ॥ सूनसी. यति ॥ सञ्जास्तताः

विन ॥ नासुस्त्रियूनधाह्नेक. स्कैर्के विष्वनध्यवि ॥ २२१ ॥ हकि
मन्त्रि किमादेहा. मृगवायिसमस्कय ॥ महायत्नय विल्वक. दि:
गीथा रविलना गना ॥ २२२ ॥ लायदव ॥ सहस्राक्ष ॥ सहस्राखि
लिवाकुउ ॥ हलमेनि रूणभकान. थाजितादबूदक्षिण ॥ २२३ ॥
कालाग्नि कूदजनका. मूगलक्ष्मा हलायुध ॥ नीलाम्बवा वाणागोः

मनोवाक्कायदोषहा ॥१८४॥ जूसन्नाथाद्दहित्रिमात्र, यादवेन्द्र:

॥नन्दन ४ बलिसर्वयमनाथाना, बौद्धक्रिय ४ बलमद ॥१८५॥

मूर्च्छिकधाद्विविदहा, कालिन्दीकर्षणोऽबल ४ भवनीवमण ४

पूर्वे, रुक्मिस्वताच्युताग्रज ४ ॥१८६॥ देवकीवसुदेवाङ्ग, ना

कण्ठ्यादितिनन्दन ४ वार्ष्णेय ४ सात्वत ४ शूर ४ गोपिवियेदू कू

लोद्वह ॥१८७॥ नवाह्नि यर्व दुग्ध, सर्वगामावीवनप्रद ४ व्र:

क्षादि कामलालिय, जगद्यापयेन्द्रेणव ४ ॥१८८॥ पूतनाघ्न ४

शाकटहि, यमलार्जुनरुज्जन ४ वाणासुरान ४ कालिन्धा, धनु

काविर्गवीथन ॥१८९॥ दामोदर ना गोवर्द्धना, यशोदानन्द

कानक ४ कालीयमर्दन ४ सर्व, गोपगोपीजनप्रिय ॥१९०॥

तीलाल्पवहनधना ल्पोविश्वाल्प कूलासव ॥ अनिरुमथन ॥
कोमी नमः ल्पोपीविमूक्तिद ॥११॥ सेघु ॥ कूवलयापीड ॥
घातीचान्दूवमर्दन ॥ कीसानिबूत्पसनाद्धे चाक्क्ष्यायाविता
मव ॥१२॥ सुधर्मा क्षितहूलाका ऊनासक्षवलानक ॥
त्यहारुप्मऊनासल्ष्म. भीमसनेयल्पयुद ॥१३॥ संदीप।

नीमृ.नायस्य यामाकालान्तकादि जित ॥ समस्तनानकराना. सर्व्व
हूयनिकाठि जित ॥१४॥ रुक्मिणीवमल्पोरुक्मि ल्पसनानन
कान्तहान ॥ समस्तसूत्पनीकोल्पा. भूमानिर्जेनूतधुन ॥१५॥
एकावीजितनूत्पार्के. मनूयाघ्रविलम्बन ॥ जवन्दुदर्पलकर्पं
कमालहितनूनल ॥१६॥ दानवाद्भसहस्राधि. सेधाद्विग

ल्काछि डिगु॥ नीला डिम महायव, मुहायवेक यूडिन ४॥ ११७॥ थ्कुं
थाथर्वइनि नितिं हं अ, जयय ४ यात्रु वेक थूक॥ कालि नाजलिव ल्कु
ला, न्हूद मल्वेक मदेन ४॥ १२४॥ विल्वेश्वर प्रसादा ह्य, कालिना
डमूताद्धेन ४॥ लसुयनि ह्नाविथंसी, कागानि दयनायक ४॥ १७
०॥ कागां सन ल्काछि थ्या, लोकलिथ्या दिउा ह्नंके ४ लिवती:

थ्रु यावथ्य ४, यूनालिववन्हुद ४॥ १४०॥ ल्कि वेक याहि छा थु
स्वांगं ल्कि नयूजक ४॥ लिवकुन्याब्रम यति ४ ह्ना कान्हु आलिनावि
ह्ला ॥१८१॥ महाल क्षीवयूल्मी वा, यानावदलयथेहा ॥ स्वआन
मूवूकुथ्येक, निक्कालयमन ह्ल कुन ॥१८२॥ यमुनायेवि वानाल
यविलीन ह्विडात्मक ४ ल्भीमवालंकारु क्वाथे ह्यानीलन्हुवेरु

व ३॥ ७२३ ॥ दूर्हेर जिनु यालेक, नक्रियाधाविकान्वन ३॥ सूवालान्तु
तादिकसाध्य, द्यवकानिषिकाटि क्वत ॥ ७२४ ॥ कुवाद्धवमू।
ध्येक रेकास्त्र छन्दमू क्रिद ४॥ सवालेस्रु जल क्रीडो, ह्यवाये
ह्य माशुव २॥ ७२५ ॥ व्र कान्त्रदेयग र्हेस्त ३ यनिद्वि ॐ विरेक
ह म ॥ ध निलीनद्दि ऊस्मूश्च न मार्ईनेम मायका ॥ ७२६ ॥ सूद।

प्रा ह्यमियस्य, हीच्याघ खिलकोन व ३॥ यार्थ्ये ध्येस्वलिंमागेम, दि।
च्छायाथमाहकि त ॥ ७२७ ॥ गर्हे॰ मायस्कुलधस्य, यादवाह्वीरुवाय
द् ३॥ उन्नाद्यार्था निगमिद ४ स्यूरमाहा स्विलहृद ४॥ ७२८ ॥ काम।
ध्वाबगियति, मंन्मथ २ सद्वबान्कक ३॥ जुनेम्न किनाक्मे वीन्म
वनिकाक्त २ सद्यमिन ४॥ ७२९ ॥ पूष्यपूविश्वविऊभी, स्मव ४

कामश्चनीयति ४५ उद्यापति विश्वकर्मा विश्वदृश्वा विश्वसृष्ट ४ ॥
॥ २६० ॥ चतुरात्मा चतुर्वक्त्रः चतुर्युगविधायकः ४ चतुर्मुखो देवः
विश्वात्मा सर्वलोकेशः काटि सूः ४ ॥ २७१ ॥ सूक्ष्मः सूक्ष्मः ४ पुनर्वर्षि
ध्योस ४ शाश्वतः सहस्राक्षः ४ महाज्ञाननिधिः कवीन्द्रो वादिनाय
क ४ ॥ २७२ ॥ ऋतुर्वैयाकरणः ४ सर्व पूर्वार्थैकवाचकः ४ वदान्

कलिविश्वैक चतुरः ४ पूर्वीगकृत ॥ २७३ ॥ बुद्धाध्यानजितात्मा
दवदवीजगत्प्रिय ४ निनायूधजंगजोत्र ४ यायनादहमादुन ४
॥ २७४ ॥ देवदेवदिव ४ काल वदार्थज्ञतिलभयक ४ ललेश्वः
दनिन्त्रदयदर् सूखद ४ सद सत्यति ४ ॥ २७५ ॥ यथार्थाख्यः खि
लक्षय ४ सर्वज्ञ ध्याविलत्रेवद ४ चतुर ४ काटि दृष्टकर्तृ प्रज्ञाया

नमितभुवन ॥ ॥ यारवक्तु वदमानेन ॥ यारवक्तुं ति यक
॥ कल्की विष्णुयशः ॥ भूत ॥ कलिकालविलायकः ॥ ॥ समस्त
म्लेछदुर्दर्षघ्नः ॥ सर्वशिष्टद्विजातिकृत ॥ सत्यकृत्वलकायद्य द्विज
दीर्घकृदभयकृत ॥ ॥ धर्मवाणीद्यविनवकृत ॥ कृतयुगदिवा
नागमन ॥ सद्य ॥ ज्ञानकेवलकृत ॥ नकृत ॥ गायधर्मकृत ॥ ॥

जनकस्वल्पुयालोक कृ मशलुभरिखलाद्विजः ॥ जुसाव्येकृजगत्कार
विश्वविद्याजयध्वजः ॥ २०० ॥ आत्मगत्वाधिकः ॥ कहे प्रद्योतिधिदू
मायतिः ॥ सहस्राख्य २०१ प्रज नाम मनीवित्तेनकायनी ॥
२०१ ॥ कथयाढ्वनातिलच ॥ प्रज्ञावादै यनाद्भुगी ॥ नकृतगन
विस्फुजः ॥ ॥ शुक्रः ॥ कावीश्वरः ॥ २०२ ॥ महविनाकृताद्वि

क्रू नादिश्यगो वलिस्वनाद ॥ वायूर्वह्नि ॥ शुचि ॥ प्रष्ट ॥ गिकवाकूद
नाद् गुरू ॥१२०३॥ विद्व लेमधिरु वस्था ग ध्वर्हो प्राक नाकम ॥
वल्लोदि नया ग्रोले नी । गह्वया ग्रोध्वनानद ॥१२०४॥ ध्वाविनाद
याशुवाया ॥ इनावाद ॥ प्रवाद नाद ॥ यवन ॥ प्रवगाना वद्व
ल्गा याय सयिनि ॥१२०५॥ गभ्रा... माशूर्त । कलकाय ॥

वर्गो अधं ॥ श्रूनसूद गनाक्षापु । वृद्धयक व... म ॥१२०६॥ द
श्री ॥ धवावाजिनाद नावन ०० क ध्वन ॥ श्रूनूवर्ष्व्क... गातू
श्वका गय धृक नाद ॥१२०७॥ श्रुत्र आत्म विद्या विद्यात्म । प्रणवद्ध ।
द साध्वन ॥ समनु गि विय दि म्या ग्रो । सामध ॥ कालमकुम ॥१२०८
॥ दिना ध्याला सूर्वासिद्धि ॥ कपिल ॥ सामय दनाद ॥ नाद ॥ श्वग्ट

सर्व्वप्रेम। वसन्तकल्याणादयः ॥२०७॥ दानप्रेमहर्षः कामधेनुः
वाञ्छितप्रसूहन्तस्मः ॥ चिन्तामणिगुणप्रेमा। मामाहितन्तमः चिन्ता
॥२१०॥ सिंहासनगन्धर्वानागेन्द्रा। वासुकिन्दैवपात्रमः ॥ वल्लभ
वाक्कण्ठेवतः वायवगन्धर्वनमानमः ॥२११॥ ॥१०००॥ कुंथनदासू
देवस्य। विष्णुनामसहस्रकं ॥ सद्योयवाधगमनः यनकरुका वि।

वर्द्धनं ॥२१२॥ अक्षयविष्णुलोकादि। सर्वमङ्गलैकसाधनं ॥ विष्णु
लोकैकसाधनं सर्वदुःखविमोचनं ॥२१३॥ [illegible]
सद्यः यर्वनिर्वाणदायकं ॥ [illegible] निः गत। सनामलवि
गावनं ॥२१४॥ शान्तिदयावनन्दानं महायातकनामादि ॥ स
र्वपापविनाशनं। सर्वलोकहितं [illegible] ॥२१५॥ समस्तविघ्न

गमनं सर्व्वविघ्नविनाशनं । श्वेतदूर्वांकुरमभिमंत्रितसर्व्वविघ्ननाशनं ॥२१६॥ नायकप्रायहितुदृ श्वेतमान्यपरस्कंध । स्वर्घतयरायदं सर्व्व सिद्धिदं सर्व्वधर्म्मदं ॥२१७॥ नाथयक्तं तथा दामं ब्रुतः कोटिरुलप्रदं । समस्तजाड्यशमनं सर्व्वविद्याप्रवर्द्धकं ॥
२१८॥ नाथदंरतुहरं नाक्रानां वागिनां सर्व्ववागनूतु । वक्ष्यानायू

गदं वात्तु कीर्णानं जीविप्रयदं ॥२१९॥ तुवर हविसर्वसा ग
र्व्व तविनाशनं । मभत्यं यूर्ण्यमायूर्व्वा ग्रवणाल्य ०नाज्ञया
तं ॥२२०॥ सकृद स्यारुलावदो सर्व्व कृत्य कोटिगा॰ । पूर्वा
लेगास्तस्तु गय १ रु २ स्यू १ य ० ता स्तथ ॥२२१॥ जयकास्यकोद्व
र्व्विशोक यादिवाय ० ता १ हिय । निर्विसिद्धसि सर्व्व सविनाह

किमुतास्विलं ॥२२२॥ नानन्तसदृशं सिद्धः प्रत्ययः सर्वकर्मसु ।
रुस्तत्वयाश्चार्यं प्राप्यस्वार्थैकसिद्धय ॥२२३॥ नावेक्ष, वायदो
तर्वं विकल्पायहृतात्मन । क्रियया विहीनाय, विष्णुः सामान्य
दर्शिने ॥२२४॥ दयेयं प्रायश्चित्ताय, सूक्ष्म हितकोस्यया ।
मत्प्रसादहते नर्दं, अहिंस्यन्हात्यमयस ॥२२५॥ कलौ सद्धः

रूलकिल्य अमन्त ख्यातिनावद् । लोकानतिरीस्महीनानां यन्तद्
र्वं विनश्यति ॥२२६॥ द्विजमूर्वेक्षवद्धत, [illegible] वर्जे रविष्यति ।
नास्ति विष्णुः परं सत्यं नास्ति विष्णुः परं यदः ॥२२७॥ नास्ति
विष्णुः परं स्थानं, नास्ति विष्णुः परं हितं । नास्ति विष्णुः परं
ध्यानं नास्ति मन्त्रमवेक्षवं ॥२२८॥ नास्ति विष्णुः परं ज्ञानं

नास्तिमा क्रमयेस्तु द॰। किं तस्य वक्तु रिमांस्ते ॥ गास्ते ॥ किं वक्तु विस्त
षे ॥ ॥२२८॥ वाजयय सहस्रेषु, हकि यस्य जनार्द्दन ॥ सर्वर्त्ती
र्थमयाविस्तु ॥ सर्वगास्तु मय ॥ यु तु ॥ ॥२२०॥ सर्वक्षेत्रमयाविस्तु
॥ सत्यसत्यं विद्या व्यक्तं ॥ आत्व कसानसर्वस्वं, सत्यमनंतमया
दिति ॥२२१॥ श्री वैस्यु वाच ॥ यथ्यास्तु दूर्ध हीनासि, हेनार्थं

स्त्रिजगत्सहा ॥ यत्मयर्य गृह्नंतस्यात्, वंदृह सर्व सूद्रंत्तरं ॥२२
२॥ अकावल महस्त्रेष्ट, समस्तमूलं यद्गं वी ॥ विश्वमानं यि सर्व
त्ते. सूत्ते ॥ क्षिण्यंति तेस्मृतौ ॥२२३॥ यमूदित्यमहानार्थ, सहिल्ले
यि दिगत्वन ॥ उष्टीक स्मानूलि स्वाञो, तथ स्त्रीवी कुवतजनं ॥
॥२२४॥ तनाविकास्मिकाद्यवा, लक्ष्मीकान्कात्मधूति ॥ ॥ य

तस्त्वं विद्युतनिर्यं, ख्ययाययागीश्वरणदि ॥२३३॥ तमप्रश्चयतीकि
मधिकं यदंशा यूनूवाहमाम ॥ तमविज्ञायकं दूृढा, प्रजन्न ।
ज्ञानमानिन ॥२३४॥ मूर्छितां स्मितं यानाथ, त्रिर्वयद प्रमी
श्वव ॥ ययकाणिकानमयस्याक्र्ये घादिश्यणक्र्य ॥२३५
॥ अलासवंश्वयाविष्ठ, सर्वद्योक माहमः ॥ रुवदादिगुरु ।
मूर्ध्ने ॥ सामान्यस्वंवज्ञीकृत ॥२३६॥ महीयमीं हि माहात्म्यं, रु-
द्रमानाकुकिंत ॥ हि प्रमतायित ध्यायाया, नूयकमकृयाम ।
मी ॥२३७॥ मयाश्ववाल्यत्वयितु ॥ सुजातस्यायुनकिं ना ॥ ।
दृश्वादगक ॥ सयाक्षी, प्रियमावाध्ववेदृता ॥२३८॥ नयासं
विहितान्स्य, सुजाधारेवयादय ॥ विलसन्तिं प्रणक्राता, सस्नू

हस्तियवाध्वया ॥२४०॥ वयाविना कथवर्द्ध कोप्ययं क्रियविग्र
हः ॥ सर्वज्ञेव क्रिजीवका, यामालाद्भिसर्स्थिमात् ॥२४१॥ वा
मृतनेवधर्मोथ ॥ कामममाक्रोहिदून न ॥४॥ कृषितानादूर्भेता ।
नां कृतायागसमाधय ॥२४३॥ सावससावसावेका, सर्व
लोकैकनायिका ॥ वसमाकमेलायस्य त्यक्त्वावामयिमकन

॥२४४॥ जूनोद्वस्थनमौवन, त्रूयमाजेवसंयधा ॥ सर्वोतिभाव
वीथेन, सर्द्धस्थमहात्मन ॥२४५॥ कस्मनउल्यतामति, दव
धवनविक्षुना ॥ थस्याभिभावनावण, विना मध्यविलीयत ॥
२४६॥ उगदकानधायाह, र्द्वाथेनद्विमाहित ॥ नास्यउ
भ्मजनामहलू, नेस्पर्धस्वाथेभवेद ॥२४७॥ तयायिकून्धर्माः

र्थं. पालनाय समाहितं ॥ विष्णोर्नाममहायदं. स्वलभ्यैकं महत्वतं
॥२५८॥ श्रुत्वा श्रयेंस्तथाख्यातिः. कान्तकामयदं नाम्नं ॥ कामाध
श्च कामतत्सु. किंतु सर्वं सर्वत्र युक्तं ॥२५९॥ वत्सभयवात्समादा
दाग्रक्रामि यदंतुतं यत् ॥ विष्णोश्च सहस्रनामेत. स्यस्येहद्दृष्य।
हृदये ॥२६०॥ नामिको नतु भक्तनस्य तत्फलं द्रष्टुविनम्फलं ॥२६१॥ मा
हादेव उवाच ॥ राम राम ति राम ति. रमे रामे मनोरमे ॥ सह
स्रनाम तत्तुल्यं श्रीरामनाम वरानने ॥२६२॥ इति श्रीपद्मपु
राणे शिवपार्वतीसम्वादे विष्णोर्नामसहस्रकं समाप्तं ॥ ॥

ॐ नमः श्यामाय नूकमाय ॥ १८ ॥ शुद्धवा... ॥ वासुदेव नमस्तेऽस्तु
नमस्ते भक्तवत्सल ॥ पाहि मां सर्वलोकेश जन्मसंसारसागरात
॥ १९ ॥ निर्मलाम्बरसंकाश नमस्ते यवमध्यव ॥ गुणातीत नमस्तेऽस्तु
पाहि मां पूर्णकाम ॥ २० ॥ नमस्ते वलिनां श्रेष्ठ नमस्ते लोकपालाय
... ॥ ... नमस्तेऽस्तु पाहि मां पद्मलोचन ॥ २१ ॥ नमस्ते दमन

(५)

हरे नमस्ते मकरध्वज ॥ रतिकान्त नमस्तेऽस्तु पाहि मां सर्वनायक
॥ २२ ॥ नमस्तेऽञ्जनसंकाश नमस्ते रुक्मवसन ॥ अनिरुद्ध नमः
स्तेऽस्तु पाहि मां विनयार्चित ॥ २३ ॥ नमस्ते विबुधावास नमस्ते विबुध
प्रिय ॥ नारायण नमस्तेऽस्तु पाहि मां शरणागत ॥ २४ ॥ नमस्ते विद्
धरश्रेष्ठ नमस्ते कमलाकर ॥ चतुर्मुख जगद्धाम पाहि मां प्रपितामह

हं ॥७॥ नमस्तुनीलमेघाभ नमस्ते पितदुःशाखि ते। आहिविष्णुजगन्नाथ
आदिमाहिवसागना ॥८॥ यलयानलसंबाण नमस्कृ दितिजान्त
क। तुवसिंहमहावीय आदि सोदीपलोचन ॥९॥ यथालसाविला
वाबी वयाहश्शोद्धतापूवा। तथमहावबाउखे आदिमदूखरवा
सागवाग ॥१०॥ गवेताभूलेयट्टडुक्त वबदा ॥ संकुपामयाग वधन

वलदवाद्या ॥ पृथपृथनमस्तिताः ॥११॥ अभानितवदवं ॥ गदूताय
स्कथाप्रता। धि यत्ता ॥ साधूअव्देव दासवाद्यास्कथेवत्र ॥१२॥
यवाच ॥ तवदवं ॥ ऊदा ॥ धा का ॥ मनीबिरि ॥ तयिसवेजगन्नो
थसस्नायतलोवन ॥१३॥ मयाद्विता ॥ कृतास वें तथादू यान
मस्कृता ॥ ययक्वेवनमर्कु॰ धर्मकामाधर्माकृय ॥१४॥ दास्कु

हिमालयस्तु ह्यवसकिवेंलादय ॥ तवपूजार्थसंभूता ऋगस्त्वयसमा
प्रगा ॥१३॥ अनन्दस्त्वयत्वंम विघ्नतयवमथं ॥ विविधेनवय
द्रूप मूकीदूयथावन् ॥१४॥ मूर्दवंवं कथंद्वैतं वर्तुंगङ्गातिमा
नव ॥ एकस्त्वं हि जगद्धाता विश्वरूप्यानिरञ्जन ॥१५॥ अयवनीव
यद्रूपं रूपावर्णविवर्जितं ॥ निर्द्वंद्वं निर्गुणं शुद्धं ज्ञानरूपमचलं

ध्रुवं ॥१६॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्तं सत्यमानन्दविग्रहं ॥ नद्रष्टा ॥ पि
नजानाति कथंजानाम्यहंप्रभो ॥१७॥ अयवनीवयद्रूपं पीतवस्त्र
चतुर्भुजं ॥ शंखचक्रगदापाणिं मुकुटाङ्गदधारिणं ॥१८॥ श्रीवत्साव
सिंसयूर्ण वनमालाविभूषितं ॥ तदद्वयं नि विवूधा ॥ यथान्यथा वस्तृ
॥१९॥ एव सर्वे स्तुवन्तश्च रुक्मनामरुपध्रुव ॥ आदिमध्यान्तरूप

भ्राम्य मग्नं विषयसागरे ॥२२॥ नान्यं त्वदस्ति लोकेश तस्मादेव
भुजं बाहूं कमलाकान्त प्रसीद मधुसूदन ॥२३॥ जराव्याधिश
तैर्युक्तो नानादुःखैर्नियोजितः । दुर्बलः कामविगाहुतः । कर्मयोगेन मूढ
पत्ति ॥२४॥ धनिनां हृष्यकापीड्य पापसंसारसागरे । विषयो
दकदूरे पापे नागबद्धसमाकुले ॥२५॥ इंद्रियावकर्मलीन व द

न॰

ध्या लोभित्रिसंपूल । निराश्रय निरालम्बे निस्सार च चकवडुलं
॥२६॥ मायया मोहितः कृत भ्रमामि सुविनिषेश्राः । नानाजातिसहस्र
षु जायमानः पुनः पुनः ॥२७॥ मयार्जन्मान्यनेकानि सहस्राण्ययु
तानि च । विविधान्यनुभूतानि संसारस्मिन् जनार्दन ॥२८॥ वेदा
शास्त्रं मया धीता । ध्यानानि विविधानि च । हिंसाक्षमसमय बान्यानि तथा

शिल्याच्यनकण ॥२९॥ जुणकायाध्रसन्नायाः सचियार्थैयाच्यया
मयस्वायाकाज गन्नाथ कैयदृदांगथाश्रुरु ॥३०॥ तयोविभिप्रवन्धुः
नीं वियागः स्वगिमास्कथा । पितावाविविधा ॥ हृद्वा मातनध्वतथासः
या ॥३१॥ दूःखानिवानुदूतानि मयासैख्याच्यनकण ॥ याकाध्ववान्धु
वा कूपेः ज्ञातवाह्मातयस्कथा ॥३२॥ मयाभितितथाश्रीणां काध्ववि

भूयमिक्लिन गर्भवास महद्दूःख नन्तूर्त मयायेसा ॥३३॥ दूः
खानियान्यनकानि वाल्ययौवन गावव । वार्द्धकेवदवीकुर्णीतानि
प्राप्तानि मया ॥३४॥ सर्वणयानि दूःखानि यमसाग्नेय मात्य
मयातान्यनूभूतानि नरकयातनाकूल ॥३५॥ क्रिमिकीटपतंगानां
हस्त्यश्वमृगपक्षिणां । सर्वत्र गवाश्चैव यथायथावनीकसां ॥३६

॥ द्विजातीनां सर्वेषां शूद्राणां च यथाविधि । धनिनां श्रोत्रियाणां
च दरिद्राणां तपस्विनां ॥ ३७ ॥ त्वया नित्यं कृतं दानं यथा च
याञ्चकं च किं ॥ गृहे धूनवामृत्यं नो देववाहयूनः ॥ धूनः ॥ ३८ ॥
गता सिद्धा गणानाथ कृत्य विद्वज्जनात् कृणां ॥ यत्तिद्वषं च स्वनर्दं
त्वानि दयानथागतं ॥ ३९ ॥ कृतं मया कृतं नान्यैः कृतं मया विनिनास्ति
था ॥ यत्कृतं मया चैव विद्यया मया दत्तं मनसा कृतं ॥ ४० ॥ पितृमातृसुहृद्भ्रा
तृ कलत्राणां हितं न च ॥ मूर्द्धिक्विश्वासकं देव्यं मम क्षेत्रानतागतं ॥ ४
१ ॥ यत्र मिथ्या न कृतं मया स्त्रीवधं मया कृतं ॥ नविद्यतं च नस्कानः
यत्राकृतं न गतं स्वशं ॥ ४२ ॥ कृतमननवकवासः कृतं स्वर्ग जगत्यः
मं ॥ कृतं मनुष्यलोके च कृतानि यज्ञतया भूव ॥ ४३ ॥ जलजं त्रयथा

अं वक्त्रः षटीनङ्गनिवर्धनी ॥ यातिवाद्दे मधव्येव कदाम वनिश्चति ॥
॥४४॥ गथाचाहं स्मनग्रहः कर्मबद्धं समाश्रितः ॥ तूधष्यावहेतथम
ध्व गत्का सिक्रमयागत ॥४॥४३॥ एवं संसारचक्रे ऽस्मि हैनवता
महर्षेण ॥ उमासिसू विर्वकाले नान्यपश्यामि कूत्रचित ॥४५॥
नजानदिकवासाद्य हयव्याकुलितेन्द्रिय ॥ कंह्युक्ति हूताः

हं कांदिशीको विवशः ॥४६॥ इदानीं त्वां महेशाथ विक्लव ॥ गन
ष्यनः ॥ प्राहिमादू ॥ खिन्नहस्त मर्न विषयससागवात ॥४७॥ कृपयाः
कृत्कजगन्नाथ हका ॥ हं यदि मनुष्य ब्रह्मनाशिमेवबधू योगिवि
कोकिविष्यति ॥४८॥ धवद्विना थमासाद्य नरुयमस्ति कूत्रचित ॥
जीविनमनः पेव यागदेमधवाय ॥५०॥ यदुवीविधिवद्वं ना

ह्वे यन्ति नराधमा॥४॥ सुगतिस्तु कथं तेषां रुद्र संसारसागरात्॥३१॥
लिंग यत्कुलशीलेन विद्यया जीवितेन च॥ यथा भिजायते रुद्र किंजे
गद्दानकिकगव॥३२॥ यद्धानि वांमूलं प्रायः अत्वानित्यं किमादि
गा॥४॥ यगन्ति नव कथाव जायमाना॥४॥ पून॥४॥ पून॥४॥३३॥ नत अनि
ष्ठानि सभा विद्यत नव कावन्तुवाद्॥ थदूमयन्ति दुह्रनां॥४॥ यदवीयू

न्याधमा॥४॥३४॥ यत्य यत्र लवकूनम ममक मोदिवधनात्॥ तत्र तत्र
रुनरकि स्वश्चवास्तु हटामम॥३५॥ आवाश्चवानना॥४॥दे या॥४॥ सू
नाघांधं॥४॥ यिसयता॥४॥ भूवायू॥४॥ यवमीसिद्धिं कस्वदि वनपुंडय
त॥३६॥ नग कूवन्ति ब्रह्माद्या॥४॥ स्थानु विविदंभा॥४॥ दव॥ कथमानुव
द्धाहि स्रीमि त्वविद्धत्तयतं॥३७॥ यथावाह्मानकावन यरतुताः

सिमयांश्रला ॥ तत्कमस्वायवाधंम यदित क्किंकृयामयि ॥७८॥
श्वा श्वना ॥ यिदव कर्माकूर्वंक्विसाध्रुव ॥ तस्मात्प्रसीदद्व
ग रक्किश्र स्हस माश्रित ॥७९॥ कुतास्मि यन्मयादव रुकिरा
वनयतसा ॥ सांभरुवदुगतसर्वं वासुदवनमा ॥ कुत ॥८०॥ श्र
वव ॥ कृकृष्णतस्कतान श्रस नागभूतेध्वज ॥ ददीतस्रमूनिग्र
सकलंवबमीध्मिद ॥८१॥ जगन्नाथं यस्य कीर्ति
मीनर ॥ स्काव णानन मतिमा समाकलरुक ॥८२॥ त्रिसंध्यं
थाजयन्नित्य मिदस्ताव वनग्नुवि ॥ धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्चलक
तनव ॥८३॥ यः ॥ कृणुयादापि श्रावयद्वासमाहित ॥ सलोकं
सांख्यह्यावि विष्णुर्निर्वाणकल्मष ॥८४॥ पर्यायदनवद ०

त्कि मुक्ति यदंगिवं । गुह्य सद्भूलं पूर्थ नदग्य यस्यकन्यावित ।

॥८५॥ ननास्ति कायमुखाय नह्यमपायमानिभ । नदूभमतेय

दघात नारुकायकदावन ॥८६॥ दानव ऋकियुकाय गुणगी

...विभायव । विष्णुरकायगनकाय गुह्वानुहानुपालिन ॥८७॥

ॐ दंसमस्का पविनागरुडु कारुण्यसं ऋ सूखमाकदवञ्ज । जु

गोपर्व शारुलदवविष्टं श्रावि मयाकीपृवृथाकमन्त्य ॥८८॥

यद्दसूपृ क्षविमलाब्वनाहं श्रायनिकिनिर्थपूनूर्वसुनाग । ...मू

किकाजा १ ग्रविगक्ति हाकु मन्त्रयंथर्घ्व भूतमधवाक्ने ॥८९॥

एक १ सयथारवदू १ खरना यव १ यव यानि तवाऽस्मियान्त्य १

सुह्वासयानासहिवानकको विष्णुस्य मस्कारित्तसूत ॥९०॥ कि

ि ॰ ॰ावाचागुलेख्वाणमां,यंके चयानेष्ठुःकथ्याहिनूलो ४ ॥ ान्नतोथ

दमीकहाखु, उगहुवीमाकास्नरवयदच ॥ ७ ॥ ाक्सयत्त ९ सगुरि

१ सविद्वान मरवेकथाहि ४ सगुलेवेविहा ४ ॥ ज्ञातामख्यातामद्गमय

चका, यस्याक्तिककि ४ मनूयाह मारवा ॥ ७ ॥ वाहिव्या देवरक पू

[redacted]